काव्य के रूप

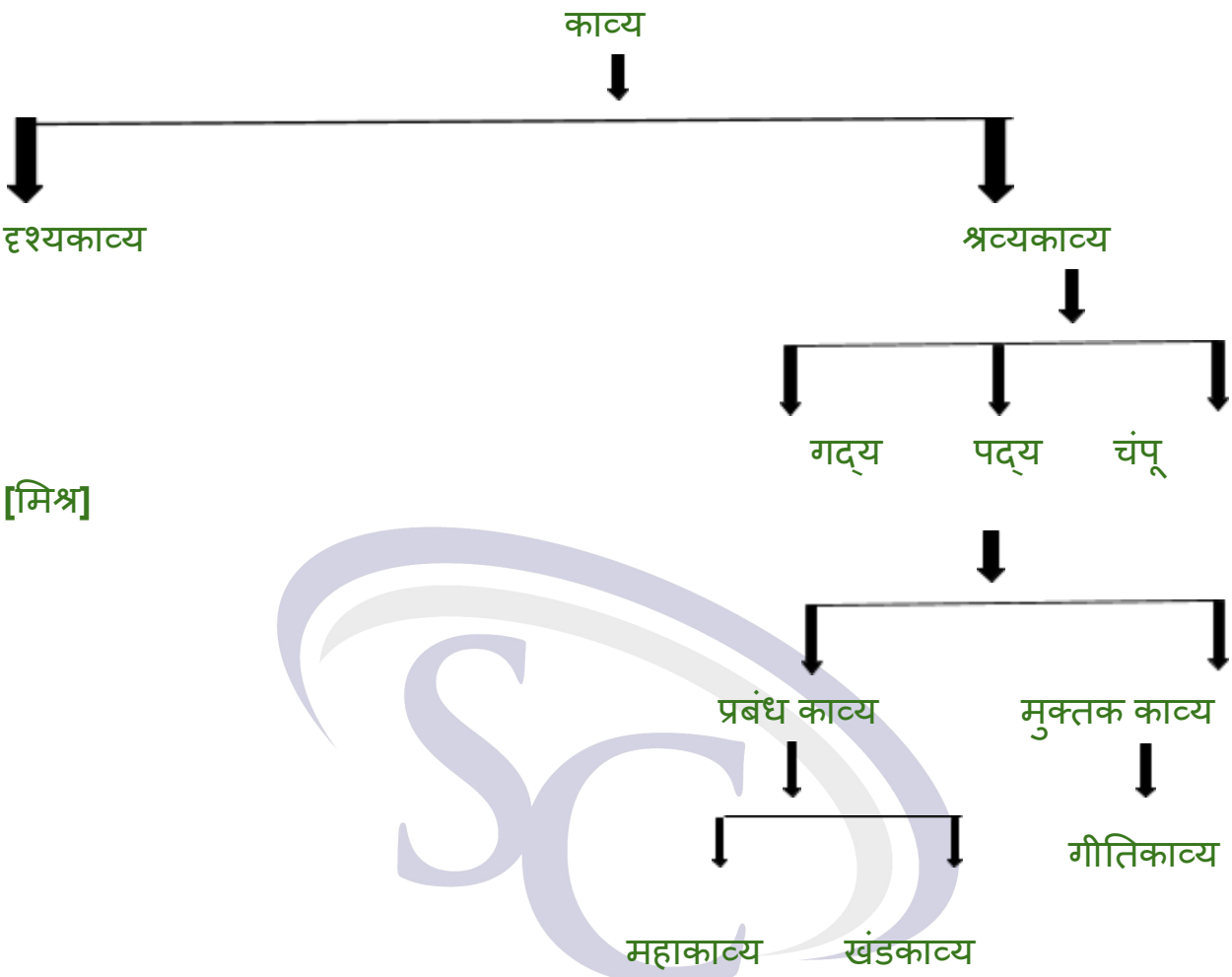

काव्य जीवन और सत्य के किसी स्वरूप का आकर्षक और सजीव चित्रण है। वह रमणीय अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द कला है। वह कल्पना और अनुभूति से प्रेरित विचारों की सजीव आकर्षक और स्मरणीय अभिव्यक्ति है। अतः उसका विषय और तथ्य कुछ भी हो सकता है, उसे एक जीवित रूप देना काव्य का प्रमुख कार्य है। काव्य की अपील प्रमुखतया कल्पना और अनुभूति से होती है। उसका साधन और माध्यम शब्द है। बुद्धितत्त्व होता है, पर वह गौण है। वर्णन के औचित्य के लिए ही उसकी आवश्यकता है। " प्रधानतया काव्य में कल्पना और अनुभूति के माध्यम से गृहीत सत्य का निरूपण किया जाता है"

काव्य एक रचना है, सृजन है। इसका संबंध विश्लेषण तर्क बुद्धि से उतना नहीं जितना सृजनात्मक या रचनात्मक प्रतिभा से है। काव्य प्रतिभा संपन्न मानव की शब्दगत सुधर सृष्टि है इसीलिए काव्य साहित्य के सभी रूपों की अपेक्षा अधिक रोचक है।

काव्य उस्फुर्त भावों का सहज उद्रेक है। जिसमें जीवन की अनुभूति स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत होती है। कविता व्यक्तिगत, सामाजिक दोनों रूपों में अभिव्यक्त होती है । कविता में लोकमंगल और

लोककल्याण, की भावना प्रमुख होती है। काव्य का स्वरूप युगपरत्वे बदलता है। काव्य और जीवन का घनिष्ठ संबंध होता है।
काव्य के प्रधान रूप दो माने गए है–
1] दृश्य काव्य

2] श्रव्य काव्य
शैली के आधारपर श्रव्य काव्य के तीन भेद माने गए है–
1] गद्य
2] पद्य
3] चंपू (मिश्र काव्य)
आकार की दृष्टि से पद्य के फिर से दो भेद किए जाते है–
1] प्रबंध काव्य
2] मुक्तक काव्य
प्रबंध काव्य के फिर से दो भेद किए जाते है –
1] महाकाव्य
2] खंडकाव्य
मुक्तक काव्य का एक प्रकार गीति काव्य माना जाता है।

महाकाव्य

साहित्य का प्रारंभ काव्य से हुआ है। समस्त प्राचीन काव्य महाकाव्य तथा खंडकाव्य में रचा गया है। काव्य में सबसे ऊंचा स्थान महाकाव्य को मिलता है। महाकाव्य का शाब्दिक अर्थ है- महान काव्य अर्थात
महाकाव्य कथानक, नायक, उद्देश्य , शैली तथा भाषा के दृष्टि से महान हो।

भारतीय काव्य चिंतकों ने महाकाव्य के स्वरूप पर गंभीर चिंतन कर लक्षण निर्धारित किए हैं। भारतीय दृष्टिकोण से महाकाव्य का स्वरूप अग्निपुराण में मिलता है। आचार्य विश्वनाथ ने अपने ग्रंथ साहित्य दर्पण में महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट किया है। महाकाव्य में जीवन का अत्यंत व्यापक चित्रण उदात्त मानवीय अनुभूतियों के रूप में प्रकट किया जाता है। भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य के निम्न लक्षण निर्धारित किए है –

1. कथावस्तु-- महाकाव्य की कथा विस्तृत जीवन गाथा होती है । वह ऐतिहासिक, सज्जनाश्रित, लोकप्रिय होती है।

2. महाकाव्य सर्गबद्ध होता है –
2.1 सर्ग ना छोटे होने चाहिए ना अधिक बड़े।
2.2 सर्ग 8 से अधिक और 32 से कम होने चाहिए।
2.3 सर्ग के अंत में भावी कथा की सूचना रहती है।
2.4 हर सर्ग का नामकरण होना चाहिए।

3. नायक – महाकाव्य में नायक होना ही चाहिए। नायक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए--
3.1 शूरवीर
3.2 क्षत्रिय
3.3 उच्च कुलोत्पन्न
3.4 धिरोदात्त

4. छंद – सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन आवश्य हो। वैसे एक सर्ग में एक ही छंद हो। परंतु एक ही सर्ग में कई छंदों का प्रयोग कभी-कभी हो सकता है।

5. रस – महाकाव्य में सभी रसों का वर्णन आवश्यक है परंतु श्रंगार, वीर और शांत में से एक मुख्य होना चाहिए अन्य रस गौण रूप में होने चाहिए।

6. उद्देश्य – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से किसी एक की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

7. वस्तु संगठन – वस्तु संगठन, नाट्य संधियाँ और संध्यायों की योजना आवश्यक है।

8. मंगलाचरण – महाकाव्य का आरंभ ईश्वर स्तुति से किया जाता है उसे ही मंगलाचरण या नमस्क्रिया कहते हैं। इसमें किसी देवता की वंदना होनी चाहिए।

9. प्रकृति वर्णन – संध्या, सूर्योदय, चंद्रोदय, नगर वर्णन, पर्वत, आश्रम, वृक्ष, उपवन आदि का वर्णन तथा जीवन के प्रसंगों की रमणीय योजना होनी चाहिए।

10. नामकरण– महाकाव्य का नामकरण कवि, नायक अथवा कथावस्तु के आधार पर होना चाहिए।

11. सज्जनों की प्रशंसा और दूर्जनों की निंदा – महाकाव्य में सज्जनों की प्रशंसा और दूर्जनों की निंदा होनी चाहिए।

भारतीय काव्यशास्त्र में महाकाव्य के उपर्युक्त लक्षण स्वीकार किए हैं । इनमें से कुछ मुख्य या अनिवार्य तत्व हैं जो महाकाव्य के लिए आवश्यक है किंतु उनका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। उदाहरणार्थ – संवाद, चरित्र चित्रण इत्यादि।

महाकाव्य संबंधी पाश्चात्य मत

पाश्चात्य काव्यशास्त्र लबस्सु काव्य के लक्षणों पर विचार करते हुए कहते हैं कि "महाकाव्य प्राचीन घटनाओं का चित्रण करने वाला पद्यबद्य रूपक है।" वैसे पश्चिम में काव्यशास्त्र संबंधी चिंतन अरस्तु के समय से प्रारंभ हो गया था। पाश्चात्य विद्वानों ने काफी अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित मत दिए है –

कथावस्तु –

1. महाकाव्य में अनुकरण होना चाहिए और यह अनुकरण समाख्यानात्मक होना चाहिए क्योंकि महाकाव्य में कथा प्रस्तुत की जाती है।

2. कथावस्तु में क्रम होना चाहिए, संगठन होना चाहिए, कथावस्तु का आदि, मध्य और अंत सुस्पष्ट और सुसंबंद्ध होना चाहिए।

3. उसमें अंवातर कथाओं का प्रयोग हो सकता है लेकिन उनसे मुख्य कथा का पोषण होना चाहिए।

4. कथानक को इतिहास से ग्रहण करना चाहिए परंतु उस कथानक को इतिहास का रूप नहीं देना चाहिए क्योंकि इतिहास में अनेक व्यक्तियों और अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। अतः हम कह सकते हैं कि महाकाव्य में इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय होना चाहिए।

चरित्र चित्रण – महाकाव्य में नायक पर विशेष ध्यान दिया गया है। उसे इतिहास का सुविख्यात व्यक्ति होना चाहिए। कुछ लोग उसे सम्राट या महापुरुष तक ही सीमित रखते हैं। उसमें उच्च गुणों का समावेश होना चाहिए। वह प्रतिष्ठित परिवार का हो। उसका कार्य ऐसा हो कि सभी लोग प्रशंसा करें।

छंद — महाकाव्य में छः पद वाले वीर छंद का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि वह सबसे अधिक भव्य और गरिमामय होता है।

वर्णनात्मकता — महाकाव्य में अनेक वस्तुओं परिस्थितियों और भवन के विस्तृत वर्णन विद्यमान रह सकते हैं पर ऐसे वर्णों में स्वाभाविक था सदा बनी रहनी चाहिए एवं यह आवश्यक है कि और संभोग घटनाओं के वर्णन से दूर ही रहे।

शैली — महाकाव्य सरल अथवा जटिल शैली में लिखा जा सकता है।

महाtattvतत्वकाव्य में जीवन के विविध चित्र होते हैं क्योंकि वह संपूर्ण जीवन की रोचक झांकी होती है।

पात्र – महाकाव्य के पात्र महान होने चाहिए। उनमें अद्भुत तत्त्व के लिए अवकाश रहता है।
उद्देश्य – महाकाव्य का लक्ष्य या उद्देश्य श्रोता का मनोरंजन है और इसका कारण कलात्मक अनुकृति है। प्राचीन विद्वान इसका उद्देश्य नैतिक और धार्मिक मानते हैं। एरिस्टोटल इसका उद्देश्य सत्य का उद्घाटन और आनंद मानता है।
इस प्रकार हम भारतीय और पाश्चात्य महाकाव्य के लक्षणों का विस्तार से विवेचन कर सकते हैं।

भारतीय एवं पाश्चात्य महाकाव्य के लक्षणों का साम्य-वैषम्य

प्राचीन एवं पाश्चात्य महाकाव्य के लक्षणों को देखने पर उनमें पर्याप्त साम्य दिखाई देता है। जो अंतर है वह सामान्य ही है जो निम्नानुसार है —

1] भारतीय काव्यशास्त्र महाकाव्य में श्रृंगार, वीर और शांत रस में से किसी एक रस को महत्त्व देता है जबकि पाश्चात्य काव्यशास्त्री वीर रस को महत्व देते हैं।

2] पाश्चात्य महाकाव्य में जातीय भावना के विकास का आग्रह लक्षित होता है जबकि भारतीय काव्यशास्त्र में इसका स्पष्ट संकेत नहीं है।

3] पाश्चात्य महाकाव्य में आदि और अंत में एक छंद के प्रयोग का विधान है जबकि भारतीय काव्यशास्त्र में विविध प्रकार के छंदों के प्रयोग का आग्रह है।

4] भारतीय महाकाव्य में नायक और उसके कार्यकलाप को विशेष महत्व प्राप्त है जबकि पाश्चात्य काव्यशास्त्री जातीय भावना को विशेष महत्व प्रदान करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन के बाद हम कह सकते हैं कि महाकाव्य के तत्व कथावस्तु, पात्र, चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, रस एवं उद्देश्य है। इन्हीं तत्वों में पाश्चात्य, प्राचीन एवं नए काव्य शास्त्रियों के मत मिलते हैं।

खंडकाव्य

प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य या खंडप्रबंध है। खंडकाव्य के लक्षणों पर संस्कृत काव्यशास्त्रियॉं ने अधिक विस्तार से विचार नहीं किया है। भामह एवं दंडी ने खंडकाव्य का उल्लेख नहीं किया है जब कि महाकाव्य का व्यापक विवेचन किया है। रुद्रट ने प्रबंध काव्य के दो भेद महाकाव्य और लघुकाव्य के नाम से किए हैं। हेमचंद्र भी खंडकाव्य का उल्लेख नहीं करते हैं।

आचार्य विश्वनाथ पहले व्यक्ति हैं जो खंडकाव्य का संक्षिप्त लक्षण प्रस्तुत करते हैं-- "एक कथा का निरूपक, पद्यबद्ध, सर्गमय ग्रंथ जिसमें सब संधियाँ भी न हो काव्य कहलाता है। काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खंडकाव्य है।"

आचार्य विश्वनाथ ने खंडकाव्य के बारे में निम्नलिखित जानकारी दी है-

1. खंडकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष का चित्रण किया जाता है।
2. उसमें महाकाव्य के लक्षण संकुचित रूप में स्वीकार किए जाते हैं।
3. रूप और आकार में खंडकाव्य महाकाव्य से छोटा होता है।
4. कुछ अन्य विशेषताएं– प्रभान्विति, वर्णन, प्रवाह आदि।

खंडकाव्य एवं महाकाव्य में अंतर

आकार प्रकार की दृष्टि से खंडकाव्य एवं महाकाव्य में वही अंतर है जो कहानी और उपन्यास अथवा एकांकी और नाटक में है। खंडकाव्य प्रबंध काव्य का ही भेद है इसलिए उसमें भी प्रायः वही तत्व रहते हैं जो महाकाव्य में है किंतु महाकाव्य का विस्तार होता है जब कि खंडकाव्य में संकोच।

" खंडकाव्य की कथा जीवन के किसी एक पक्ष, एक घटना, एक परिस्थिति से संबंध रखती है। इसमें प्रासंगिक कथाएँ बहुत कम या नहीं भी होती है। कथा में उतार-चढ़ाव के लिए भी अधिक क्षेत्र नहीं होता। इसके अतिरिक्त मार्मिक प्रसंगों का चयन, कथा की व्यवस्थित एवं संगठित योजना, उत्सुकता और स्वाभाविकता आदि गुण होते हैं। कथा ऐतिहासिक या काल्पनिक हो सकती है।

खंडकाव्य में पात्र कम होते हैं और उसके चरित्र का विकास भी व्यापक धरातल पर नहीं हो पाता। फिर भी चरित्र की स्पष्ट एवं सचिव रेखाएं स्वाभाविक, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में विकसित होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त संवाद तथा देशकाल वातावरण की भी संक्षिप्त, रोचक, स्वाभाविक और परिस्थितिनुकूल योजना होनी चाहिए। रस एवं भाव का विस्तार खंडकाव्य में कम होता है। फिर भी उसमें एक प्रमुख रस होता है।

खंडकाव्य का उद्देश्य महाकाव्य के समान महान होता है। जीवन के आदर्शों एवं सत्प्रवृत्तियों से खंडकाव्य को भी प्रेरणा पूर्ण बनाना चाहिए चाहे महाकाव्य जैसी विराटता, महानता, गौरव - गरिमा इसमें न आ पावे फिर भी उदात्त मानवीय संवेदनाओं का खंडकाव्य में भी प्रकाशन होना चाहिए।

खंडकाव्य की भाषा शैली में कलात्मकता और गरिमा होनी चाहिए। उसमें सरलता, सजीवता, वास्तविक अलंकार एवं प्रवाह होना चाहिए। भावानुकूल छंद विधान भी उसके सौंदर्य की वृद्धि करता है।

हिंदी साहित्य के खंडकाव्य में मैथिलीशरण गुप्त के पंचवटी, यशोधरा, सिद्धराज, जयद्रथ वध रामनरेश त्रिपाठी के स्वप्न, मिलन, पथिक निराला का तुलसीदास आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं।

खंडकाव्य और महाकाव्य का भेद हम निम्नानुसार देख सकते हैं –

अ. क्र.	खंडकाव्य	महाकाव्य
1	आकार की दृष्टि से खंडकाव्य छोटा होता है।	आकार की दृष्टि से महाकाव्य बड़ा होता है।
2	खंडकाव्य की कथा संक्षिप्त होती है।	महाकाव्य की कथा व्यापक होती है।
3	खंडकाव्य में कम पात्रों में अधिक भाव भरने की क्षमता होती है।	महाकाव्य में अधिक पात्रों की भरमार होती है।
4	जीवन का प्रासंगिक रूप खंडकाव्य में दिखाई देता है।	महाकाव्य में जीवन की समग्रता पायी जाती है।
5	खंडकाव्य में एक सर्ग की रचना होती है।	महाकाव्य में अनेक सर्गों की रचना होती है।
6	भाषा की दृष्टि से सरल और सुलभ होता है।	भाषा की दृष्टि से महाकाव्य गंभीर, प्रौढ़ होता है।
7	खंडकाव्य में जीवन के एक अंश का चित्रण रहता है।	महाकाव्य में पूरे जीवन का चित्रण रहता है।
8	खंडकाव्य में एक उपकथा का विवेचन होता है।	महाकाव्य में अनेक कथाओं का संकलन होता है।

उपर्युक्त विवेचन से हम कह सकते है की खंडकाव्य का व्यापक रूप महाकाव्य है। या महाकाव्य का एक अंश खंडकाव्य है इसलिए दोनों में तत्त्वों की दृष्टि से समानता होते हुए भी आकार, भाषा, पात्र एवं वातावरण में मौलिक अंतर है। दोनों का उद्देश्य मानवी जीवन का हित और कल्याण है।

मुक्तक काव्य

भारतीय काव्य में प्रबंध की दृष्टि में श्रव्य काव्य के दो भेद माने गए हैं – प्रबंधक और मुक्तक। प्रबंध काव्य के अंतर्गत महाकाव्य और खंडकाव्य होते हैं। प्रबंध काव्य में पूर्वापर संबंध रहता है लेकिन मुक्तक में पूर्वापर संबंध का सर्वथा अभाव रहता है। मुक्तक काव्य में भावात्मकता का प्राधान्य रहता है।

जो रचना काव्यशास्त्र के नियमों के आधार पर की जाती है या जिसमें अलंकारिकता का पांडित्य प्रदर्शन होता है। जिसमें काव्यशास्त्र और व्याकरण का बंधन होता है उस रचना को प्रबंध काव्य कहा जाता है लेकिन जिस काव्य रचना में काव्यशास्त्र के नियमों का पालन नहीं होता या जो रचना मुक्त छंद में की जाती है, जिसमें पंडित के प्रदर्शन की अपेक्षा भावों को अधिक महत्व दिया जाता है, अनुभूति और संवेदना की प्रधानता होती है, वैयक्तिकता को अधिक महत्व दिया जाता है, स्वच्छंद भावों का जहाँ उद्रेक होता है उसे मुक्तक काव्य कहते हैं। इस प्रकार मुक्तक काव्य सभी बंधनों को छोड़कर स्वतंत्र नई रचना है, जिसमें परंपरा को छोड़कर आधुनिकता और नवीनता का सहज प्रयोग मिलता है। मुक्तक रचना में परंपरा को हटाया जाता है। बदलते मूल्यों को स्थापित किया जाता है।

परिभाषाएँ

1] 'मुक्तक' शब्द की व्युत्पत्ति मुक्त + कन से होती है। मुक्त धातु का अर्थ है -- बंधन रहित अथवा स्वतंत्र।

2] अग्निपुराणकार -- इनके मतानुसार मुक्तक वह है जो एक ही श्लोक में चमत्कारक्षम हो।

3] वामन – वामन ने प्रबंध काव्य की अपेक्षा मुक्तक काव्य को हीन कोटि का काव्य माना है। उनका कथन है कि " जैसे अग्नि का एक का एक कण नहीं चमकता वैसे ही मुक्तक भी अकेला शोभित नहीं होता। "

4] अभिनव गुप्त – "मुक्तक उसे कहते हैं जो पूर्वापर निरपेक्ष होकर भी रसास्वादन में समर्थ हो।"

मुक्तक काव्य के लक्षण इस प्रकार है –

मुक्तक काव्य के लक्षण

1] कथा – मुक्तक काव्य स्वच्छता धारा होने के कारण उसकी कथा प्रबंध काव्य के समान व्यापक नहीं होती, संक्षिप्त होती है। कथा जीवन के विशिष्ट प्रसंग में प्रभावात्मक होती है। प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।

2] चरित्र चित्रण – मुक्तक काव्य में चरित्र चित्रण बहुत कम होते हैं । कम पात्रों में अधिक भाव साकार किए जाते हैं। नायक या नायिका का चरित्र चित्रण महत्वपूर्ण प्रसंगों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। चरित्र चित्रण में गौण घटनाओं को हटाया जाता है। पात्रों में सजीवता लाने के लिए संवादों का उचित प्रयोग किया जाता है।

3] देशकाल वातावरण – मुक्तक काव्य में कवि विषय विस्तार के लिए देशकाल वातावरण को अधिक महत्व देता है। कथा जिस वातावरण में घटित हुई है उस वातावरण को प्रभावती ढंग से प्रस्तुत करता है। वातावरण के अभाव में कथा नीरस बन सकती है। इसलिए कवि परंपरा से हटकर नवीन संवेदना का भाव अभिव्यक्त करता है।

4] संवाद **–** मुक्तक काव्य में छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से एक प्रवाह और गेयता निर्माण होती है। गेयता में व्यक्तिगत भाव की प्रधानता तथा मानवी संवेदना का भाव प्रमुख होता है। संवादों के कारण मुक्तक प्रभावात्मक रचना बन जाती है।

5] भाषा **–** मुक्तक की भाषा स्वच्छंद और मुक्त छंद में होती है। उसमें पांडित्य प्रदर्शन नहीं होता। भाषा में सरलता, स्वाभाविकता और गद्यात्मकता प्रमुख होती है।

6] उद्देश्य **–** मुक्तक काव्य का प्रमुख उद्देश्य है जीवन की सच्ची अनुभूति साकार करना। आधुनिकता और यथार्थ बोध का सुंदर संगम मुक्तक काव्य में होता है। बदलते हुए नए मूल्यों की स्थापना मुक्तक में की जाती है। सामान्य पाठक इस रचना को सरल समझ सकता है। मानवता की स्थापना और आधुनिकता मुक्तक के प्रधान गुण है।

7] रस **–** मुक्तक में प्रबंध काव्य के समान रसधारा नहीं बहती। मुक्तक में तो रस के ऐसे छींटे पड़ते हैं जिनसे हृदय कलिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है। अर्थात मुक्तक में संचार करना अधिक कठिन है। प्रबंध में विभावादि की योजना जितनी सरल और सहज होती है उतनी मुक्तक में नहीं।

विशेषताएँ **–**

1] मुक्तक मेरा रसमग्र करने की क्षमता हो।

2] सफल मुक्तक में नाद-सौंदर्य होना चाहिए।

3] मुक्तक में छंद अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम होना चाहिए।

4] मुक्तक में सरसता होनी चाहिए। प्रबंध की धारा में तो नीरस पद्य भी उसी प्रकार सरस हो जाते हैं जिस प्रकार भगीरथी की पावन जलधारा में मलीन जल भी पूर्ण प्रभाव ग्रहण कर लेता है, लेकिन मुक्तक में ऐसा नहीं होता।

5] मुक्तक काव्य की रचना की सफलता के लिए कवि में कल्पना की समाहार शक्ति होनी चाहिए। वह अपने भावों को मधुर कल्पना से जितने हृदयग्राही ढंग से प्रस्तुत करेगा उसकी मुक्तक रचना उतनी ही सफल होगी।

6] मुक्तक रचनाकार में मार्मिक दृश्यों का चयन करने की क्षमता होनी चाहिए। असीमित जीवन क्षेत्र से उसे ऐसे मार्मिक दृश्य चुन लेने चाहिए।

7] मुक्तक का वृत्तांश ऐसा होना चाहिए कि पाठक उस तक शीघ्र पहुँच सके।

8] मुक्तककार को व्यंग्य प्रयोग में प्रवीण होना चाहिए क्योंकि उसके पास प्रबंध की भांति विस्तृत क्षेत्र नहीं होता।

उपर्युक्त विवेचन के बाद मुक्तक काव्य की परिभाषा इन शब्दों में निर्धारित की जा सकती है –

" जिस रचना का लगाव पूर्वापर किसी दूसरी रचना से नहीं होता वह अनुबंधहीन स्वतः अर्थद्योतन में समर्थ रचना मुक्तक कहलाती है।"

गीतिकाव्य

गीतिकाव्य कवि के अंतःस्थल से निकलने वाली वह मनोहर निर्झरिणी है जिसमें संगीत की लहरियों की थिरकन और भावों की मधुरीम तरंगवालियों का नर्तन समाविष्ट रहता है। निःसंदेह काव्यकला अपने कोमलतम स्वरूप को लेकर गीतिकाव्य में ही अवतरित हुई है।

गीतिकाव्य का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द लिरिक(Lyric) है जिसका संबंध वीणा के सदृश एक वाद्य यंत्र से है इसीलिए कुछ लोगों ने लिरिक का अनुवाद वैनिक भी किया है। वैनिक या लिरिक का मूल अर्थ तो वीणा से संबंद्ध है परंतु प्रायः उन सभी गेय पदों के लिए गीतिकाव्य शब्द प्रयुक्त किया जाता है।

वस्तुतः संगीत यदि गीत का कमनीय कलेवर है तो निजि भावातिरेक उसमें स्पंदित होने वाला प्राणतत्व है। इस नीजि भवतिरेक के अभाव में गीत निर्जीव एवं निष्प्राण हो जाता है। यह भावातिरेक सुखात्मक या दुखात्मक दोनों हो सकता है।

परिभाषाएँ

1] महादेवी वर्मा **–** " साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द है जो अपने ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।"

2] डॉ श्याम सुंदर दास **–** "गीतिकाव्य में कवि अपनी अंतरात्मा में प्रवेश करता है। बाह्य जगत को अपने अंतःकरण में ले जाकर उसे अपने भाव में रंजीत करता है। उसमें शब्द-साधन के साथ स्वर संगीत की साधना होती है।"

3] हडसन **–** "शुद्ध गीतिकाव्य में एक ही भाव, एक ही उमंग भावावेश के साथ संक्षिप्त रूप में व्यंजित होता है। विस्तार उसके प्रभाव को कम कर देता है।"

4] हरवर्ड रीड **–** "सूक्ष्म अनुभूतिमय रचना को गीतिकाव्य कहा जाता है।"

5] राइस **–** "भाव या भावात्मक विचार के लयमय विस्फोट को गीतिकाव्य कहते हैं।"

गीतिकाव्य के तत्त्व

गीतिकाव्य के निम्नलिखित तत्त्व है –

1. भावप्रवणता **:--** मानव का हृदय असंख्य भावों और अनुभूतियों का क्रीड़ा स्थल है। प्रेम, करुणा, हर्ष, एवं विषाद आदि भाव उसमें सदैव विद्यमान रहते हैं। कवि अपने गीतों में अंतरतम के इन्हीं मूल भावों को वाणी प्रदान करता है। हृदय की सुख दुखात्मकता ही गीतिकाव्य का विषय बनती है। गीत में हृदय की कोमल भावनाओं का सहज, स्वाभाविक स्फुरण होता है। कवि के अंतर की अनुभूति तीव्रता की चरम सीमा पर पहुँच जाती है। तभी गीतिकाव्य का जन्म होता है। करुणा के भावों को गीतिकाव्य का स्त्रोत माना गया है। –

इसीलिए कवि पंत ने लिखा है–

" वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमडकर आंखों से चुपचाप
वही होगी कविता अनजान"

इस उदाहरण का यह अभिप्राय नहीं है कि गीत केवल करुणा से निर्माण होता है। बल्कि उसका अर्थ यह है कि गीत भावावेश की तीव्रता चरमसीमा का परिचायक है। भावप्रवणता गीतिकाव्य का सर्वप्रधान तत्व है। गीत में वर्णित भाव जितना अधिक गहन व उदात्त होगा, गीत उतना अधिक उच्च कोटि का कहा जाएगा।

2. आत्माभिव्यक्ति **–** गीतिकाव्य का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व आत्माभिव्यक्ति है। गीत निर्माण में कवि की निजी सुख-दुखमयी अभिव्यक्ति रहती है। अतः उसका स्वरूप आत्माभिव्यक्ति परख बन जाता है परंतु विशेषता यह है कि यह अभिव्यक्ति आत्मपरक होते हुए भी सबकी अनुभूति बन जाती है। गीत का स्वाद लेने वाला प्रत्येक पाठक और श्रोता कवि की अनुभूति से साम्य रखता है। गीत रचना स्वांतःसुखाय होते हुए भी सभी को सुख प्रदान करती है। गीतकार के गीतों का 'मैं' सभी समाज का सूचक बनता है। इसी में गीतकार की सफलता निहित है। यदि कवि केवल स्वांतःसुखाय के लिए गीत लिखता है तो उसकी अभिव्यक्ति सफल नहीं कही जाएगी।

3 . सौंदर्यमयी कल्पना **–** गीतिकाव्य आत्मा की अनुभूति का व्यक्त रूप है। गीतकार अपनी अनुभूतियों को सौंदर्यमयी कल्पना द्वारा व्यक्त करता है। वह रूप विधान, बिंब, प्रतीक, उपमान आदि के प्रयोग से

अपनी कृति में अपूर्व सौंदर्य का सृजन करता है। इस काव्य निर्मिति में सौंदर्यमयी कल्पना महत्वपूर्ण योगदान करती है।

4 संक्षिप्त आकार – गीतिकाव्य में खंड अनुभूतियों को व्यक्त किया जाता है। यह अनुभूति संक्षिप्त होती है। अतः मार्मिक होती है। यदि भावना का अधिक विस्तार होता तो भाव की सघनता और तीव्रता कम होने का डर रहता है। वर्णन विस्तार करने से गीति काव्य की आत्मा को हानि पहूँचती है।

5. संगीतात्मकता अथवा गेयता – गीतिकाव्य में संगीतात्मकता होती है। संगीतात्मकता उसका प्रधान स्वर है। इसके लिए कोमलकांत पदावली को अपनाता है। गीति का सहज, स्वाभाविक रूप उसकी संगीतात्मकता और गेयात्मकता में सुरक्षित रहता है। उसकी प्रभाव शक्ति भी इससे बढ़ती है। संसार के श्रेष्ठ गीत गेय ही है और रहेंगे।

6. प्रभावान्विति और समाहित प्रभाव – गीतिकाव्य में किसी एक मार्मिक अनुभूति को शब्द बद्ध किया जाता है अतः उसमें एक सूत्रता और एक श्रेय रहता है। अतः वह समाहित प्रभाव को उत्पन्न करता है । जिस गीत में जितनी प्रभावान्विति होगी वह उतना ही सुंदर और मार्मिक होगा। यह प्रभावान्विति ही गीतिकाव्य को एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना का पद प्रदान करती है।

7. कलात्मक कोमलकांत पदावली – गीतिकाव्य कवि की स्वयं अनुभूति की सौंदर्यमयी कल्पना है अतः शब्दबद्ध करने के लिए कोमलकांत पदावली की नितांत आवश्यकता होती है क्योंकि गीतिकाव्य में कोमल भावनाओं के अनुरूप मृसन, कोमल, सुंदर, प्रवाहात्मक एवं कलात्मक सुंदर भाषा शैली होती है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य के गीतिकाव्य के इतिहास में विद्यापति, सूरदास, तुलसी, मीरा आदि का नाम लिया जा सकता है। किंतु इस दृष्टि से छायावादी कवियों का कार्य ज्यादा उल्लेखनीय है। भाषा की लाक्षणिक व्यंजना शक्ति, सुंदर मूर्त-अमूर्त विधान, स्वाभाविक अलंकरण, नई सौंदर्य सृष्टि, नई उपमान योजना आदि सभी कलात्मक साधनों का विकास गीतिकाव्य में अपने छायावादी काल में कर लिया था।

पाश्चात्य समीक्षा में गीतिकाव्य की जो विशेषताएँ हैं उनमें संगीतात्मकता और आत्माभिव्यक्ति को गीतिकाव्य की आत्मा स्वीकार किया है। उन्हीं के परिणामस्वरूप गीति में सरल उद्रेक, नवोन्मेष ,स्वच्छंदता आदि विशेषताएँ आ जाती है।

प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य के भेद

अ. क्र.	प्रबंध काव्य	मुक्तक काव्य
1	प्रबंध काव्य के दो भेद है – महाकाव्य और खंडकाव्य	मुक्तक काव्य का एक भेद है – गीतिकाव्य
2	प्रबंध काव्य में पूर्वापर संबंध रहता है।	मुक्तक में पुर्वापर संबंध का सर्वथा अभाव रहता है।
3	प्रबंध में भावात्मकता प्रधान नहीं रहती।	मुक्तक में भावात्मकता की प्रधानता रहती है।
4	प्रबंध कवि की किसी महति इच्छा, इतिवृत्त विधायिनी बुद्धि और शिल्प कुशल चेतना का परिणाम है।	मुक्तक कवि की सद्य:स्फुरित भावुकता, समाज चेतना और भावविधायिनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति है।

5	प्रबंध में विभावादि की योजना सरल, सहज होती है।	मुक्तक में रसों का संचार करना अधिक कठिन कार्य है।
6	प्रबंधकार को काव्य के लिए विस्तृत क्षेत्र रहता है।	मुक्तककार को मुक्तक के लिए संकीर्ण परिधि होती है।
7	प्रबंधकार पर बंधन रहते हैं।	मुक्तक बंधन रहित काव्य होता है।
8	प्रबंध एक विस्तृत वनस्थली है जो पाठकों को बहुत देर तक रसमग्न करती है।	मुक्तक विस्तृत वनस्थली से चुना हुआ गुलदस्ता है जिससे हृदयकलिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है।
9	प्रबंध में पात्रों की भरमार रहती है।	कम पात्रों द्वारा अधिक भाव प्रकट किए जाते हैं।
10	प्रबंध में वीर, शांत, श्रृंगार रस प्रधान होता है।	मुक्तक में रसों के छींटे पडते हैं।
11	प्रबंध में भाषा का पांडित्य प्रदर्शन होता है।	मुक्तक में भाषा का पांडित्य प्रदर्शन नहीं होता। मुक्त छंद में लिखी जाती है।
12	प्रबंध में काव्यशास्त्र के बंधन रहते हैं।	मुक्तक में काव्यशास्त्र के बंधन नहीं होते।

by Dr. Sangita Chitrakoti